REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 7 | APRIL - 2019

बी. एड. पाठ्यक्रम के सेमेस्टर प्रणाली के प्रति प्रशिक्षणार्थियों के दृष्टिकोण का अध्ययनः केस अध्ययन

डॉ. सुरेन्द्र कुमार[1] , डॉ. श्रुति आनन्द[2]
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, बी० एड० विभाग, सदनलाल सावलदास खन्ना महिला महाविद्यालय, इलाहाबाद।
[2]असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, आर्य कन्या डिग्री कालेज, इलाहाबाद।

प्रस्तावना :

आजकल प्रतियोगिता के वातावरण में हर विद्यार्थी चाहे प्रवेश प्रक्रिया हो या चयन प्रक्रिया सभी में अपना स्थान सुनिश्चित करना चाहता है। ऐसे में शिक्षण एवं परीक्षण–प्रक्रिया की गुणवत्ता का आकलन किया जाना महत्वपूर्ण है। परम्परागत शिक्षण–प्रक्रिया जिसमें सत्रांत परीक्षा प्रक्रिया अपनायी जाती है, काफी समय से प्रचलन में है। कभी शिक्षण–प्रक्रिया तो कभी परीक्षा–प्रक्रिया पर प्रश्न उठाया जाता रहा है। शिक्षण एवं परीक्षा–प्रक्रिया की गुणवत्ता के लिए समय–समय पर इनमें परिवर्तन भी होता रहा है। परिवर्तन की इस प्रक्रिया में इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद ने भी अपने पाठ्यक्रम में बदलाव करके बी० एड० एंव परास्नातक पाठ्क्रम में सत्र 2014 से सेमेस्टर पद्यत्ति लागू कर दिया। सेमेस्टर प्रक्रिया के विषय में शिक्षकों एवं छात्रों का दृष्टिकोण अलग–अलग है।

जहाँ सत्रीय या परम्परागत परीक्षा प्रणाली में शिक्षकों का कार्य मात्र कक्षा अध्यापन तक सीमित था, परीक्षा का संचालन, प्रश्न–पत्र बनाना तथा मूल्यांकन मात्र सीमित शिक्षकों/परीक्षकों द्वारा किया जाता था, वहीं सेमेस्टर प्रणाली में शिक्षकों को शिक्षण के साथ–साथ आंतरिक मूल्यांकन, प्रोजेक्ट कार्य का मूल्यांकन, आंतरिक प्रश्न–पत्र निर्माण एवं उसके मूल्यांकन के दायित्वों के अधिकार का निर्वहन करता है। उपरोक्त दायित्वों का निर्वहन करते हुए शिक्षक विश्वविद्यालय, शिक्षण संस्थान, पाठ्यक्रम के उद्देश्य, छात्रों की आवश्यकता तथा सुविधा का ध्यान तो रखता ही है साथ ही साथ छात्रों को अनुशासित भी करता है, जिससे निर्धारित मानक के अनुसार छात्र बी० एड० पाठ्यक्रम के अन्तर्गत अध्ययन करते हैं। सेमेस्टर प्रणाली में छात्र अधिक व्यस्त, क्रियाशील एवं उद्देश्य केन्द्रित रहते हैं। छात्र पाठ्यक्रम की गतिविधियों में इतना व्यस्त रहते हैं कि चाहकर भी पाठ्यक्रम के अतिरिक्त कुछ करने के लिए उनके पास समय शेष नहीं बचता है। ऐसे में यह जानना अति आवश्यक है कि सेमेस्टर प्रणाली विश्वविद्यालय के साथ–साथ पाठ्यक्रम के उद्देश्यों को प्राप्त करने में कितना सफल हुआ है।

शोध प्रश्नः–

इस विषय पर अध्ययन करने से पूर्व शोधकर्ताओं के मन में कुछ सार्थक प्रश्न आये, जिनके समाधान के लिए शोधकर्ताओं ने इस विषय पर यह अध्ययन किया। इस अध्ययन के शोध प्रश्न निम्न हैं–

1. क्या सेमेस्टर प्रणाली छात्रों के लिए उपयुक्त है?
2. क्या छात्र सेमेस्टर प्रणाली से सन्तुष्ट हैं?
3. क्या यह प्रणाली पाठ्यक्रम एवं छात्रों के उद्देश्यों को पूरा करता है?
4. क्या छात्र अधिक भार का अनुभव करते हैं?

5. क्या यह प्रणाली पाठ्यक्रम के समयावधि की दृष्टि से उपयुक्त है?

अध्ययन के उद्देश्यः–

इस प्रपत्र का उद्देश्य छात्रों की दृष्टि से सेमेस्टर प्रक्रिया का समालोचनात्मक अध्ययन करना तथा सेमेस्टर प्रक्रिया की प्रभावशीलता एवं उपयोगिता को जानना है। जिससे सेमेस्टर प्रक्रिया की प्रासंगिकता एवं वैद्यता की परीक्षा की जा सके। यह भी जानना कि यह प्रक्रिया छात्रों के लिए कितना उपयोगी व सुविधापूर्ण है। संक्षेप में इस अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित है–

1. बी० एड० पाठ्यक्रम में सेमेस्टर प्रणाली के प्रति छात्रों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
2. बी० एड० पाठ्यक्रम में सेमेस्टर प्रणाली के प्रति छात्रों के दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाः–

अध्ययनकर्ताओं ने अध्ययन की प्रकृति के आधार पर समान वितरण की परिकल्पना निश्चित किया है जो इस प्रकार है–

''प्रशिक्षणार्थियों के अवलोकित तथा प्रत्याशित प्रतिक्रिया वितरण समान नहीं है।''

सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षणः–

सेमेस्टर प्रणाली से सम्बन्धित अनेक अध्ययन पूर्व में किये जा चुके हैं जिससे अध्ययन विधि के सन्दर्भ में दिशा निर्देश प्राप्त होता है। **बशरत एवं अन्य (2018),** ने पाकिस्तान के शारीरिक चिकित्सा विज्ञान में सेमेस्टर वनाम वार्षिक प्रणाली विषय पर 1000 प्रतिदर्श लेकर अध्ययन किया। उन लोगों ने अध्ययन में पाया कि दोनों प्रणाली के शिक्षण प्रणाली में अन्तर है। अध्ययन के अनुसार वार्षिक प्रणाली वेहतर शैक्षिक गुणवत्ता प्रदान करती है। यह छात्रों को अपने विषय के सम्प्रत्यय पर अच्छा नियन्त्रण प्राप्त करने में सहायता प्रदान करती है। खेलकूद, शोध, पर्व, उत्सव एवं समारोह आदि पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के लिए अधिक समय मिलता हैं। सेमेस्टर प्रणाली में मात्र प्राप्तांक अधिक आते हैं। प्राप्तांक का छोड़कर बाकी देखा जाये तो समग्र रूप से वार्षिक परीक्षा प्रणाली वेहतर गुणवत्तायुक्त अधिगम उपलब्ध कराती है।

प्रवीन एवं साइद **(2014),** ने वार्षिक एवं सेमेस्टर प्रणाली का तुलनात्मक अध्ययन किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि वार्षिक परीक्षा प्रणाली सेमेस्टर प्रणाली की तुलना में अधिक औपचारिकता पूर्वक संचालित किया जाता है। वार्षिक परीक्षा में अंतिम ग्रेड अंतिम परीक्षा पर आधारित होता है। वार्षिक परीक्षा प्रणाली में प्रश्न एवं परीक्षा बहुत लम्बी एवं दीर्घकालिक होती है। सेमेस्टर प्रणाली की तुलना में वार्षिक परीक्षा प्रणाली में प्रश्नों के विकल्प अधिक होतें हैं। वार्षिक परीक्षा प्रणाली में परीक्षा एवं परीक्षण अत्यधिक सुरक्षित एवं गोपनीय होते हैं।

रहमान एवं पाठक **(2013),** ने सेमेस्टर प्रणाली के प्रति छात्रों एवं शिक्षकों के दृष्टिकोण का अध्ययन किया और निष्कर्ष पाया कि आंतरिक मूल्यांकन एवं सम्पूर्ण मूल्यांकन के सन्दर्भ में छात्र संतुष्ट नहीं हैं। अधिकांश प्रत्युत्तरदाता सी० जी० पी० ए ० **(CGPA)** के अन्तर्गत किये गये मूल्यांकन को समझने में अस्मर्थ थे। सेमेस्टर प्रणाली को प्रभावी एवं सफल बनाने वाले कालेजों में संसाधन विशेषरूप से सूचना सम्प्रषण संसाधनों का अभाव पाया गया।

यूसफ एवं हासिम (2012), ने पाकिस्तान में वार्षिक एवं सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली पर केस अध्ययन किया और पाया कि 74 प्रतिशत छात्र सेमेस्टर प्रणाली तथा 20 प्रतिशत छात्र वार्षिक परीक्षा प्रणाली को अच्छे ग्रेडिंग के लिए उपयुक्त मानते है। 84 प्रतिशत छात्र मानते हैं कि सेमेस्टर प्रणाली में अच्छे अंक प्राप्त होते हैं जबकि मात्र 16 प्रतिशत छात्र मानते हैं कि वार्षिक परीक्षा प्रणाली में अच्छे अंक प्राप्त होते हैं। रोजगार के अवसर के संदर्भ में 50 प्रतिशत छात्र ने सेमेस्टर प्रणाली को जबकि 26 प्रतिशत छात्र ने वार्षिक परीक्षा प्रणाली को उपयुक्त माना। अधिकतम 70 प्रतिशत छात्र के अनुसार सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली में सम्प्रत्यय को समझने का अवसर अधिक मिलता है जबकि मात्र 16 प्रतिशत छात्रों ने इस संदर्भ में वार्षिक परीक्षा प्रणाली को उपयुक्त माना। 31 प्रतिशत छात्र मानते हैं कि सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली अकादमिक लक्ष्य केन्द्रित रहता है जबकि 22 प्रतिशत छात्र मानते हैं कि वार्षिक परीक्षा प्रणाली में अकादमिक लक्ष्य प्राप्त किया जाता है। सर्वाधिक 92

प्रतिशत छात्रों ने कहा कि सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली में छात्रों का परीक्षण अनेक तरीकों से किया जाता है। शतप्रतिशत छात्रों ने माना कि सेमेस्टर प्रणाली छात्रों को वार्षिक प्रणाली की अपेक्षा कौशल प्रदर्शन एवं कौशल प्रबन्धन में वेहतर बनाता है। 56 प्रतिशत छात्रों ने माना कि वार्षिक परीक्षा प्रणाली में परीक्षा बर्ष के अन्त में होने से छात्रों पर अकादमिक रूप से भार अधिक आता है। सतत मूल्यांकन के सन्दर्भ में 84 प्रतिशत छात्रों ने सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली के पक्ष में अपना विचार दिया। 58 प्रतिशत छात्रों ने माना कि वेहतर अधिगम के संदर्भ में सेमेस्टर प्रणाली उपयुक्त है। 56 प्रतिशत छात्रों के अनुसार सेमेस्टर प्रणाली अधिक खर्चीला है।

मलिक, अवैस एवं खानम **(2010),** ने वार्षिक एवं सेमेस्टर प्रणाली में एम० ए० अंग्रजी के परीक्षा परिणाम का तुलनात्मक अध्ययन किया। इनके अध्ययन का परिणाम बताता है कि दोनों ही प्रणाली (वार्षिक एवं सेमेस्टर प्रणाली) में एम० ए० अंग्रजी के परीक्षा परिणाम की गुणवत्ता में अन्तर है। वार्षिक प्रणाली में छात्रों को विषय में प्रवीणता प्राप्त करने के लिए प्रयाप्त समय मिलता है। जबकि सेमेस्टर प्रणाली छात्रों को भाषा संश्लेषण करने हेतु प्रशिक्षित करती है।

अग्रवाल (2005), ने बताया कि सेमेस्टर से वार्षिक या वार्षिक से सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली पाठ्यक्रम में जाने से पहले छात्रों को इसके बारे में विस्तृत जानकारी दे देनी चाहिए। मूल्यांकन एक आवर्ती प्रक्रिया है जिसकी चार अवस्थायें हैं – तैयारी, आकलन, मूल्यांन एवं परावर्तन/चिन्तन।

अग्रवाल (1997), नेतर्क दिया कि केवल वही शिक्षा अच्छी है जो प्रभावी अधिगम को सुनिश्चित करती है। सफलता का मानदण्ड प्रभावी अधिगम है।

अनुसंधान विधिः–

यह अनुसंधान एक केस अध्ययन है। यह अध्ययन सर्वे विधि से किया गया है। शोधकर्ताओं द्वारा स्व–निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग करके छात्रों से व्यक्तिगत सम्पर्क करके आकड़े संग्रहीत किये गये हैं।

अध्ययन का सीमांकनः–

यह अध्ययन इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद द्वारा संचालित बी० एड० पाठ्यक्रम तक ही सीमित है। इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद के संघटक महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों को ही प्रतिदर्श के रूप में सम्मिलित किया गया है।

प्रतिदर्श एवं प्रतिदर्शनः–

प्रतिदर्श के रूप में बी० एड० के चतुर्थ सेमेस्टर के तीन महाविद्यालयों से छात्रों का चयन उद्देश्यपूर्ण न्यादर्शन विधि से किया गया है। महाविद्यालय के अनुसार प्रतिदर्श निम्न प्रकार हैं–

- सदनलाल सांवलदास खन्ना महिला महाविद्यालय, इलाहाबाद– 55
- इविंग क्रिश्चियन कालेज, इलाहाबाद– 55
- काली प्रसाद बी०एड० प्रशिक्षण कालेज, इलाहाबाद– 40

विश्लेषण एवं व्याख्याः–

आकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या काई वर्ग (χ^2) परीक्षण एवं प्रतिशत के आधार पर किया गया है। df= 2 एवं सार्थकता स्तर .01 लिया गया है।

सारणी

आकड़ों का काई वर्ग (χ^2) एवं प्रतिशत विश्लेषण

क्र.सं.	कथन	प्रतिक्रिया			χ^2 df= 2 सार्थकता स्तर .01 सारणी मान 9.21
		हाँ	नहीं	कह नहीं सकते	
1	सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली में अंको का प्रतिशत अधिक आता है।	**106** (70.66)	**17** (11.3)	**27** (18.00)	77.09
2	सेमेस्टर प्रणाली में सम्प्रत्यय (Concept) अच्छी तरह समझने का अवसर मिलता है।	**129** (86.00)	**07** (4.66)	**14** (9.33)	187.72
3	सेमेस्टर प्रणाली में अकादमिक (Academics) उद्देश्यों पर अधिक ध्यान दिया जाता है।	**109** (72.66)	**11** (7.33)	**30** (20.00)	108.04
4	सेमेस्टर प्रणाली में छात्र पाठ्यक्रमीय (Curricular) गतिविधियों में अधिक व्यस्त रहते हैं।	**128** (85.33)	**07** (4.66)	**05** (3.33)	199.16
5	सेमेस्टर प्रणाली में छात्रों के मूल्यांकन की अनेक विधियों का प्रयोग किया जाता है।	**117** (78.00)	**07** (4.66)	**26** (17.33)	138.28
6	सेमेस्टर प्रणाली में छात्रों को कुशलता विकास के अधिक अवसर प्राप्त होते हैं।	**124** (82.66)	**06** (4.66)	**20** (13.33)	166.24
7	सेमेस्टर प्रणाली में छात्रों को कौशल प्रदर्शन के अधिक अवसर प्राप्त होते हैं।	**129** (86.00)	**11** (7.33)	**10** (6.66)	187.24
8	प्रत्येक सेमेस्टर में पाठ्यक्रम का भार समान है।	**52** (34.66)	**79** (52.66)	**19** (12.66)	13.12
9	सेमेस्टर प्रणाली में छात्रों का सतत मूल्यांकन संभव होता है।	**99** (66.00)	**10** (06.66)	**41** (27.33)	81.64
10	सेमेस्टर प्रणाली सीखने के लिए पूर्णतः उपयुक्त है।	**104** (69.33)	**21** (14.00)	**25** (16.66)	87.64
11	सेमेस्टर प्रणाली में परीक्षाफल घोषित होने में अधिक समय लगता है।	**74** (49.33)	**48** (32.00)	**28** (18.66)	21.28
12	सेमेस्टर प्रणाली में एक विषय में फेल होने पर उस विषय की परीक्षा एक वर्ष बाद होती है।	**127** (84.66)	**16** (10.66)	**07** (04.66)	178.68
13	सेमेस्टर प्रणाली में अंतिम वर्ष के छात्रों को अध्ययन पूरा होने के बाद डिग्री के लिए छःमाह और इंतजार करना पड़ता है।	**99** (66.00)	**14** (09.33)	**37** (24.66)	77.32
14	सेमेस्टर प्रणाली में महाविद्यालय के अन्य गतिविधियों में सम्मिलित होने का अवसर नहीं मिलता।	**43** (28.66)	**86** (57.33)	**21** (14.00)	43.72
15	सेमेस्टर प्रणाली में पाठ्यक्रम निर्धारित	**42** (28.00)	**81** (54.00)	**27** (18.00)	31.08

	समय में पूरा नही हो पाता।				
16	सेमेस्टर प्रणाली में अध्ययन अधिक खर्चीली है।	**91** (28.00)	**34** (22.66)	**25** (16.66)	51.42
17	सेमेस्टर प्रणाली छात्रों को सतत अधिगम, सतत् मूल्यांकन एवं पृष्ठपोषण का अवसर उपलब्ध कराती है।	**118** (78.66)	**05** (03.33)	**27** (18.00)	143.56
18	सेमेस्टर प्रणाली में शिक्षक –छात्र अन्तर्क्रिया अधिक होती है।	**124** (82.66)	**07** (04.66)	**19** (12.66)	165.72
19	सेमेस्टर प्रणाली छात्रों में सतत अधिगम की आदत का विकास करता है।	**126** (84.00)	**07** (04.66)	**17** (11.33)	196.28
20	सेमेस्टर प्रणाली में छात्रों का मूल्यांकन कई चरण में होता है।	**138** (92.00)	**03** (02.00)	**09** (06.00)	232.68
21	सेमेस्टर प्रणाली में छात्रों को नियमित कक्षा में उपस्थित होना पड़ता है।	**134** (89.33)	**08** (05.33)	**08** (05.33)	211.68
22	सेमेस्टर प्रणाली में शिक्षक द्वारा पाठ्यक्रम दुहराने/पुनरावृत्ति करने (Revision) का अवसर नहीं मिलता।	**84** (56.00)	**59** (39.33)	**17** (11.33)	46.52
23	सेमेस्टर प्रणाली में परीक्षा कई चरण (Sessional Test, Project, End Semester examination) में होने से शिक्षक एवं छात्रों के ऊपर भार अधिक है।	**105** (70.00)	**30** (20.00)	**15** (10.00)	93.00
24	सेमेस्टर प्रणाली में समय अभाव के कारण अतिरिक्त कक्षा (Extra Classes) अध्ययन/अध्यापन का अवसर उपलब्ध नहीं हो पाता है।	**103** (68.66)	**31** (20.66)	**16** (10.66)	86.52

नोटः– कोष्ठक में दिये गये सभी मान प्रतिक्रिया प्रतिशत को प्रदर्शित कर रहे हैं।

सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि (प्रश्नावली के सभी कथनों के सापेक्ष) परिगणित χ^2 के मान क्रमशः 77.09, 187.72, 108.04, 199.16, 138.28, 166.24, 187.24, 13.12, 81.64, 87.64, 21.28, 178.68, 77.32, 43.72, 31.08, 51.42, 143.56, 165.72, 196.28, 232.68, 211.68, 46.52, 93.00 एवं 86.52 df= 2के लिए .01 सार्थकता के सारणी मान 9.21 से अधिक हैं। अतः उपरोक्त सभी परिगणित मान .01सार्थकता स्तर पर सार्थक हैं। अतः शून्य परिकल्पना कि अवलोकित तथा प्रत्याशित वितरणों में अन्तर नहीं है को .01 सार्थकता स्तर पर अस्वीकार किया जा सकता है। परिणामतः समान वितरण की परिकल्पना कि अवलोकित तथा प्रत्याशित वितरण समान हैं को भी निरस्त किया जाता है।

अतः कहा जा सकता है कि बी० एड० प्रशिक्षणार्थियों की राय तीन प्रतिक्रिया वर्गों में समान रूप से वितरित स्वीकार नहीं की जा सकती है।

कथन संख्या 1 के संदर्भ में सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि 70.66 प्रतिशत प्रशिक्षाणार्थियों ने माना कि सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली में अंको का प्रतिशत अधिक आता है। जबकि 11.30 प्रतिशत छात्रों की प्रतिक्रिया इसके विपरीत रही तथा 18 प्रतिशत छात्रों ने अनिश्चितता प्रकट किया।

कथन संख्या 2 के संदर्भ में सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि अधिकतम 86 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थी मानते हैं कि सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली में सम्प्रत्यय अच्छी तरह समझने का अवसर प्राप्त होता है जबकि 4.66 प्रतिशत छात्रों ने इसके विपरीत प्रतिक्रिया दिया तथा 9.33 प्रतिशत छात्रों ने अनिश्चितता प्रकट किया।

कथन संख्या 3 के संदर्भ में सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि 72.66 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थियों का मानना है कि सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली में अकादमिक उद्देश्यों पर अधिक ध्यान दिया जाता है, जबकि 7.33 प्रतिशत छात्रों ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दिया तथा 20 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थियों ने अनिश्चितता प्रकट किया।

कथन संख्या 4 कि सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली में छात्र पाठ्यक्रमीय गतिविधियों में अधिक व्यस्त रहते हैं के संदर्भ में सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि 85.33 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थियों ने सहमति व्यक्त किया जबकि मात्र 4.66 प्रतिशत छात्रों ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दिया तथा बहुत कम 3.33 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थियों ने अनिश्चितता प्रकट किया।

कथन संख्या 5 के संदर्भ में सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि 78 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थी मानते हैं कि सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली में छात्रों के मूल्यांकन की अनेकों विधियों का प्रयोग किया जाता है जबकि 4.66 प्रतिशत छात्रों ने विपरीत प्रतिक्रिया दिया तथा 9.33 प्रतिशत छात्रों ने अनिश्चितता प्रकट किया। नकारात्मकता या अनिश्चितता प्रकट करने वाले ऐसे प्रशिक्षणार्थी हो सकते हैं जिनकी उपस्थिति बहुत कम रहती होगी तभी वे विभाग की मूल्यांकन प्रक्रिया के विषय में ठीक से नहीं जानते।

कथन संख्या 6 के संदर्भ में सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि अधिकतम 82.66 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थी मानते हैं कि सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली में छात्रों को कुशलता विकास के अधिक अवसर प्राप्त होते हैं। क्योंकि सेमेस्टर प्रणाली में अनेक गतिविधियॉ आयोजित की जाती हैं जो मूल्यांकनार्थ होती हैं जिसमें सभी प्रशिक्षणार्थियों की उपस्थिति अनिवार्य रहती है इसलिए कहा जा सकता है कि सभी छात्रों को समान अवसर प्राप्त होता है। जबकि 4.66 प्रतिशत छात्रों ने विपरीत प्रतिक्रिया दिया तथा 13.33 प्रतिशत छात्रों ने अनिश्चितता प्रकट किया।

कथन संख्या 7 के संदर्भ में सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि अधिकतम 86 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थी मानते हैं कि सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली में छात्रों को कौशल प्रदर्शन के अधिक अवसर प्राप्त होते हैं जबकि 7.33 प्रतिशत छात्रों ने इसके विपरीत प्रतिक्रिया दिया तथा 6.66 प्रतिशत छात्रों ने अनिश्चितता प्रकट किया। सेमेस्टर प्रणाली में अनेक कौशल आधारित गतिविधियों का आयोजन किया जाता है जिसमें विद्यालय आधारित अनुभव, सूक्ष्म शिक्षण, अभ्यास शिक्षण, सहायक सामग्री निर्माण कार्यशाला, योगाभ्यास, संगीत एवं पेंटिग प्रमुख हैं। जिसमें महाविद्यालय में नियमित आने वाले प्रशिक्षणार्थियों को कौशल प्रदर्शन का अधिक अवसर प्राप्त होता है।

कथन संख्या 8 के संदर्भ में सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि सीमित संख्या में (34.66 प्रतिशत) प्रशिक्षणार्थी मानते हैं कि सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली में प्रत्येक सेमेस्टर में पाठ्यक्रम का भार समान होता है जबकि औशत संख्या में (52.66 प्रतिशत) छात्रों ने माना कि प्रत्येक सेमेस्टर में पाठ्यक्रम का भार समान नहीं होता है, 12.66 प्रतिशत छात्रों ने अनिश्चितता प्रकट किया।

कथन संख्या 9 के संदर्भ में सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि औशत से अधिक संख्या में (66 प्रतिशत) प्रशिक्षणार्थी मानते हैं कि सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली में छात्रों का सतत मूल्यांकन सम्भव होता है जबकि 6.66 प्रतिशत छात्रों ने माना कि छात्रों का सतत मूल्यांकन सम्भव नहीं होता है, 27.33 प्रतिशत छात्रों ने अनिश्चितता प्रकट किया। सेमेस्टर प्रणाली में 20 प्रतिशत पाठ्यक्रम का मूल्यांकन आंतरिक होता है जिसके लिए प्रोजेक्ट कार्य, प्रायोगिक कार्य, प्रत्येक सेमेस्टर में दो बार आंतरिक मूल्यांकन आदि किया जाता है। जिससे प्रशिक्षणार्थियों का सतत मूल्यांकन संभव हो पाता है।

कथन संख्या 10 के संदर्भ में सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि औशत से अधिक संख्या में (66.33 प्रतिशत) प्रशिक्षणार्थी मानते हैं कि सेमेस्टर प्रणाली सीखने के लिए पूर्णतः उपयुक्त है जबकि 14.00 प्रतिशत छात्रों ने माना कि यह प्रणाली सीखने के लिए पूर्णतः उपयुक्त नहीं है, शेष 16.66 प्रतिशत छात्रों ने अनिश्चितता प्रकट किया। सेमेस्टर प्रणाली में अनेक गतिविधियों का आयोजन होता है जिससे प्रशिक्षणार्थियों का कौशल विकास होता है जैसे– विद्यालय आधारित अनुभव जो इन्टर्नशिप के प्रथम भाग में रखा गया है, अभ्यास

शिक्षण जो इन्टर्नशिप के द्वितीय भाग में रखा गया है, प्रोजेक्ट कार्य, प्रायोगिक कार्य, योग एवं व्यक्तित्व विकास आधारित कौशल, सूचना सम्प्रषेण तकनीकि आधारित कौशल का विकास आदि सम्मिलित है। जिससे प्रशिक्षणार्थियों को सीखने का सम्पूर्ण अवसर मिलता है।

कथन संख्या 11 के संदर्भ में सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि लगभग औसत संख्या में (49. 33 प्रतिशत) प्रशिक्षाणार्थी का मानना है कि सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली में परीक्षाफल घोषित होने में अधिक समय लगता है कभी–कभी अगले सेमेस्टर की परीक्षा के समय में परीक्षाफल घोषित होता है। जबकि 32.00 प्रतिशत छात्रों ने माना कि सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली में परीक्षाफल घोषित होने में अधिक समय नहीं लगता है। परीक्षाफल देर में घोषित होने से प्रशिक्षणार्थियों को अगले सेमेस्टर के परीक्षा की तैयारी में दबाव का अनुभव करना पड़ता है।

कथन संख्या 12 के संदर्भ में सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि अधिकतम् संख्या में (84.66 प्रतिशत) प्रशिक्षाणार्थीयों का मानना है कि सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली में किसी एक विषय में फेल होने की दशा में एक वर्ष बाद उस विषय की परीक्षा होती है। क्योंकि जब सम्बन्धित सेमेस्टर की परीक्षा होती है तभी उस विषय की परीक्षा होती है। जिससे छात्र को अपने मुख्य सेमेस्टर के साथ अलग से फेल हुए विषय की भी तैयारी करनी पड़ती है। जबकि 10.66 प्रतिशत छात्रों ने उपरोक्त के विपरीत अपनी प्रतिक्रिया दिया। इस संदर्भ में अनिश्चितता प्रकट करने वालों की संख्या बहुत ही कम (04.66 प्रतिशत) रही।

कथन संख्या 13 के संदर्भ में सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि औशत संख्या में (66.00 प्रतिशत) प्रशिक्षाणार्थीयों का मानना है कि सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली में अंतिम वर्ष के प्रशिक्षाणार्थीयों की प्रशिक्षण पूरा होने के बाद भी डिग्री के लिए छः माह और प्रतीक्षा करनी पड़ती है। क्योंकि परीक्षाफल अक्सर देर में घोषित किया जाता है। जबकि बहुत कम 09.33 प्रतिशत छात्रों ने उपरोक्त के विपरीत अपनी प्रतिक्रिया दिया। इस संदर्भ में अनिश्चितता प्रकट करने वालों की संख्या 24.66 प्रतिशत रही।

कथन संख्या 14 के संदर्भ में सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि औशत से भी कम संख्या में (28.66 प्रतिशत) प्रशिक्षाणार्थी मानते हैं कि सेमेस्टर प्रणाली में महाविद्यालय की अन्य गतिविधियों जैसे– एन. एस. एस., सांस्कृतिक गतिविधियां, खेलकूद आदि गतिविधियों में सहभाग करने का अवसर नहीं मिलता । क्योंकि विभाग की गतिविधियां ही इतनी अधिक होती हैं जिससे अतिरिक्त समय नहीं मिल पाता है। जबकि 57.33 प्रतिशत छात्रों ने इसके विपरीत अपनी प्रतिक्रिया दिया। शेष 14.00 प्रतिशत छात्रों ने अनिश्चितता प्रकट किया।

कथन संख्या 15 के संदर्भ में सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि 28.00 प्रतिशत प्रशिक्षाणार्थी मानते हैं कि सेमेस्टर प्रणाली में पाठ्यक्रम निर्धारित समय में पूरा नहीं हो पाता है। क्योंकि सेमेस्टर प्रणाली में अनेक गतिविधियां जैसे– विद्यालय आधारित अनुभव, अभ्यास शिक्षण , प्रोजेक्ट कार्य, प्रायोगिक कार्य, योग एवं व्यक्तित्व विकास आधारित कौशल, सूचना सम्प्रषेण तकनीकि आधारित कौशल का विकास आदि करायी जाती हैं जिससे अन्य गैर मूल्यांकन गतिविधियों में सम्मिलित होने का अवसर नहीं मिल पाता है। जबकि 54.00 प्रतिशत छात्रों ने माना कि पाठ्यक्रम निर्धारित समय में पूरा होता है। शेष 18.00 प्रतिशत छात्रों ने अनिश्चितता प्रकट किया।

कथन संख्या 16 के संदर्भ में सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि 28.00 प्रतिशत प्रशिक्षाणार्थी मानते हैं कि सेमेस्टर प्रणाली में अध्ययन अधिक खर्चीला है। क्योंकि सेमेस्टर प्रणाली में अनेक गतिविधियों के आयोजन से सामग्रियों की अधिक आवश्यकता पड़ती है। जबकि 22.66 प्रतिशत छात्रों ने इस प्रणाली को कम खर्चीला माना है। शेष 16.66 प्रतिशत छात्रों ने अनिश्चितता प्रकट किया।

कथन संख्या 17 के संदर्भ में सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 78.66 प्रतिशत प्रशिक्षाणार्थी मानते हैं कि सेमेस्टर प्रणाली छात्रों को सतत अधिगम, सतत मूल्यांकन एवं पृष्टपोषण का अवसर उपलब्ध कराती है। क्योंकि अनेक गतिविधियों के आयोजन एवं सत्रीय परीक्षा (Sessional Tests) में छात्रों को उनके प्रस्तुतीकरण के आधार पर निर्देशित एवं परामर्शित किया जाता है। जबकि बहुत कम 03.33 प्रतिशत छात्रों ने विपरीत प्रतिक्रिया दिया तथा शेष 18.00 प्रतिशत छात्रों ने अनिश्चितता प्रकट किया।

कथन संख्या 18 के संदर्भ में सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 82.66 प्रतिशत प्रशिक्षाणार्थी मानते हैं कि सेमेस्टर प्रणाली शिक्षक–छात्र अन्तक्रिया अधिक होती है। जो अच्छे शिक्षण एवं प्रशिक्षण की पहचान है। क्योंकि प्रत्येक गतिविधि के आयोजन में शिक्षक–छात्र अन्तक्रिया होती है और छात्रों को

उनके अच्छे प्रस्तुतीकरण के लिए उन्हे प्रोत्साहित किया जाता है। जबकि बहुत कम 04.66 प्रतिशत छात्रों ने विपरीत प्रतिक्रिया दिया तथा शेष 12.66 प्रतिशत छात्रों ने अनिश्चितता प्रकट किया।

कथन संख्या 19 के संदर्भ में सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 84.00 प्रतिशत प्रशिक्षाणार्थी मानते हैं कि सेमेस्टर प्रणाली छात्रों में सतत अधिगम की आदत का विकास करता है। क्योंकि अनेक गतिविधियों के आयोजन एवं सत्रीय परीक्षा (Sessional Tests) जो कि प्रत्येक सेमेस्टर में दो बार आयोजित किया जाता है जिसके कारण छात्रों में सतत अधिगम की आदत का विकास होता है। बहुत कम 04. 66 प्रतिशत छात्रों ने माना कि सेमेस्टर प्रणाली छात्रों में सतत अधिगम की आदत का विकास नहीं करता है तथा शेष 11.33 प्रतिशत छात्रों ने अनिश्चितता प्रकट किया।

कथन संख्या 20 के संदर्भ में सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 92.00 प्रतिशत प्रशिक्षाणार्थी मानते हैं कि सेमेस्टर प्रणाली में छात्रों का मूल्यांकन कई चरण में होता है। जिनमें मुख्य चरण निम्न हैं– विद्यालय आधारित अनुभव, अभ्यास शिक्षण , प्रोजेक्ट कार्य, प्रायोगिक कार्य, योग एवं व्यक्तित्व विकास का मूल्यांन, सूचना सम्प्रषेण तकनीकि आधारित कौशल का प्रदर्शन, वाह्य एवं आंतरिक मूल्यांकन (जो कि प्रत्येक सेमेस्टर में दो बार आयोजित किया जाता है)। बहुत कम 02.00 प्रतिशत छात्रों ने विपरीत प्रतिक्रिया दिया तथा शेष 06.00 प्रतिशत छात्रों ने अनिश्चितता प्रकट किया।

कथन संख्या 21 के संदर्भ में सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 89.33 प्रतिशत प्रशिक्षाणार्थी मानते हैं कि सेमेस्टर प्रणाली छात्रों को नियमित कक्षा में उपस्थित होना पड़ता है। ऐसा इसलिए भी करना पड़ता है क्योंकि सैद्धांतिक पाठ्यक्रम/गतिविधि में 75 प्रतिशत तथा प्रायोगिक पाठ्यक्रम/गतिविधि में 90 प्रतिशत छात्रों की उपस्थिति अनिवार्य है, तथा बिना अनिवार्य रूप से कक्षा में उपस्थिति के सभी प्रायोगिक गतिविधियों में सम्मिलित होना सम्भव भी नहीं है। समान संख्या में 5.33 प्रतिशत छात्रों ने नकारात्मक तथा विपरीत प्रतिक्रिया दिया। ये ऐसे छात्र हो सकते हैं जो कक्षा में नियमित नहीं आते तथा जिनकी उपस्थिति बहुत ही कम होती है।

कथन संख्या 22 के संदर्भ में सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 56.00 प्रतिशत प्रशिक्षाणार्थी मानते हैं कि सेमेस्टर प्रणाली में शिक्षक द्वारा पाठ्यक्रम दुहराने (Revision) का अवसर नहीं मिलता है। ऐसा इसलिए हो सकता है क्योंकि पाठ्यक्रम में प्रायोगिक आधारित गतिविधियों की अधिकता है। जिसमें छात्रों का मूल्यांकन कई चरण में होता है। औशत से कम 39.33 प्रतिशत छात्रों ने विपरीत प्रतिक्रिया दिया तथा शेष 11.33 प्रतिशत छात्रों ने अनिश्चितता प्रकट किया।

कथन संख्या 23 के संदर्भ में सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि औशत से अधिक 70.00 प्रतिशत प्रशिक्षाणार्थी मानते हैं कि सेमेस्टर प्रणाली में परीक्षा कई चरण में होने से (जैसे– आंतरिक मूल्यांकन परीक्षा, प्रोजेक्ट कार्य, सेमेस्टर उपरांत परीक्षा आदि) शिक्षक एवं छात्रों पर भार अधिक रहता है। जबकि 20.00 प्रतिशत छात्रों ने विपरीत प्रतिक्रिया दिया तथा मात्र 10.00 प्रतिशत छात्रों ने अनिश्चितता प्रकट किया।

कथन संख्या 24 के संदर्भ में सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि औशत से अधिक 68.66 प्रतिशत प्रशिक्षाणार्थी मानते हैं कि सेमेस्टर प्रणाली में समयाभाव के कारण अतिरिक्त कक्षा (Extra Classes) अध्ययन/अध्यापन का अवसर नहीं उपलब्ध हो पाता है। क्योंकि गतिविधियां अधिक हो जाती हैं। लगभग 20. 66 प्रतिशत छात्रों ने विपरीत प्रतिक्रिया दिया तथा मात्र 10.66 प्रतिशत छात्रों ने अनिश्चितता प्रकट किया।

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर कह सकते हैं कि बी० एड० एक प्रशिक्षण कार्यक्रम है जिसमें मात्र कक्षा अध्यापन ही आवश्यक नहीं है वरन् विस्तृत प्रशिक्षण आवश्यक है। निश्चित रूप से यह प्रशिक्षण एक विस्तृत रूपरेखा पर आधारित है। इस शिक्षक–शिक्षा पाठ्यक्रम को सत्र में एक बार मूल्यांन करके इसके उद्देश्यों को प्राप्त करना संभव नहीं है। इसका सम्पूर्ण प्रशिक्षण सेमेस्टर प्रणाली में ही सम्भव है। सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि कथन संख्या 8, 11, 14, 15, 16 तथा 24 को छोड़कर शेष सभी कथनों के प्रति छात्रों द्वारा दिये गये प्रतिक्रिया से सेमेस्टर प्रणाली की गुणवत्ता परिलक्षित हो रही है।

संदर्भः–

- **Basharat, Ayesha at all (2018),** Annual VS Semester Examination System In Physiotherapy in Pakistan: A Student Prospective. *International Journal of Physiotherapy and Research,* Int J

Physiother Res 2018, Vol 6(1): 2600-05. ISSN 2321-1822, DOI: https://dz.doi.org/10.16965/ijpr,2017-261, https://www.researchgate.net/publication/323114707 (Search on 03.03.2019)

- **B.Ed. Syllabus (2018),** University of Allahabad, Allahabad.
- Porveen U. and Saeed M. (2014), A comparative study of examination practice in Annual and Semester System in public sector Universities of the Punjab Pakistan. International Journal of Academic Research in Progressive Education and Development 2014; 3(1): 243-54.
- **Rahman A. and Pathak T. (2013),** Perception of students and teachers towards semesters system: A study in some selected degree colleges of Nagaon, district of Assam. Perception 2013; 4(1).
- **Yousaf, A & Hashim, M (2012),** A Case Study of Annual and Semester System of Examination of Government College of Management Science, Peshawar, Pakistan. *International Journal of Academic Research in Business and Social Sciences*, September 2012, Vol. 2, No. 9, ISSN: 2222-6990. www.researchgate.net (Search on 03.03.2019)
- **Malik T., Avais P., Khanam T. (2010),** Comparative analysis of M.A. English Result under Annual and Semester System: Quality Assurance in Pakistan. Language in India.2010; 10(5)
- **Aggarwal J. (2005),** Essential of Examination System: Evaluation. Tests and Measurement New Delhi, Vikas Publication.

डॉ. सुरेन्द्र कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, बी० एड० विभाग, सदनलाल सावलदास खन्ना महिला महाविद्यालय, इलाहाबाद।

LBP PUBLICATION